प्रकाशन तिथि : 01 अगस्त, 2020
प्रेषण तिथि : 04 अगस्त, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 10 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

जयंती विशेष :

दुर्गादास राठौड़

2 अगस्त को भारतीय पंचांग अनुसार एवं 13 अगस्त को आंगल पंचांग अनुसार दुर्गादास राठौड़ की जयंती है। दुर्गा बाबा की जयंती समाज में काम करने वाले हर उस व्यक्ति को आकर्षित करती है जो समाज में पूज्य भाव रखकर उसकी आराधना में सात्विक त्याग को वरैण्य मानता है। दुर्गादास जी के जीवन पर बहुत कुछ लिखा गया और निरन्तर लिखा जा रहा है उनका जीवन मध्यकालीन नायकों में प्रेरणास्पद स्वरूप में सब पर प्राथमिकता पाता है क्योंकि उनका जीवन निर्हेतु के त्याग की प्रतिमूर्ति है। जिसको कुछ नहीं चाहिए वहीं वास्तविक शहंशाह बन पाता है और हमारे प्रेरणा स्रोत दुर्गादास ऐसे ही शहंशाह है जिनका शासन किसी राज्य पर नहीं बल्कि हमारे जैसे लाखों करोड़ों साधारण लोगों के हृदय पर है और वह पहले भी था, आज भी है और भविष्य में भी बना रहेगा। प्रायः हम देखते हैं कि जिसको कुछ नहीं चाहिए वे संसार से बिरत हो संन्यासी हो जाते है लेकिन दुर्गा बाबा ऐसे शहंशाह नहीं हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'सम्पर्क से बनता है साधना का सातत्य'

साधना के लिए आवश्यक है कि सतत जुड़े रहें, निरन्तरता रहे तभी साधना में आगे बढ़ेंगे। हमने यदि स्वीकार कर लिया है कि यह ईश्वरीय कार्य है तो फिर कोताही नहीं बरतनी चाहिए। सातत्य बनाए रखना चाहिए। सातत्य के लिए सम्पर्क आवश्यक है लेकिन महामारी के कारण हमारा भौतिक सम्पर्क कम हो पा रहा है इसलिए ऐसे माध्यमों से सम्पर्क बनाए रखना है।

संघ के दायित्वाधीन स्वयंसेवकों से संवाद करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने 19 जुलाई (रविवार) को अपने उद्बोधन में उपर्युक्त बात कही। गुगल मीट के माध्यम से आयोजित इस संवाद में जुड़े केन्द्रीय कार्यकारियों, संभाग प्रमुखों, विभाग प्रभारियों एवं प्रांत प्रमुखों को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि आप सब संघ के पायनियर बनकर समाज में संघ को प्रस्तुत करते हैं इसलिए समाज आपसे चाहता है कि आपका जीवन व्यवहार श्रेष्ठ लोगों का सा होना चाहिए। गीता का यह संदेश हमारे पर भी लागू होता है कि यदि संसार हमारी तरफ देख रहा है तो हमारा गलत काम संसार के पतन का मार्ग खोलता है। लोग हमारे में श्रेष्ठता का दर्शन करना चाहते हैं और श्रेष्ठता है आजीवन कर्मरत रहना। संघ के दृष्टिकोण से आप सामान्य नहीं हैं, आप अपना महत्व समझें और संसार को संघ की बात समझाने में लग जाए। संसार में वही जीवन सार्थक है जो संकल्प पूर्वक कार्य करते हैं, उसे जीवन भर निभाते हैं इसलिए सतत चलते रहें। चरिवैति-चरिवैति। यह सातत्य हमारे जीवन में प्रकट होना चाहिए। आप अपने महत्व को अनुभव करें और आपके भीतर एक युद्ध छिड़ जाए। समाज की विकृतियों के खिलाफ युद्ध एवं अपने आपकी विकृतियों के खिलाफ युद्ध। यही युद्ध गीता में बताया है, यही तनसिंह जी का संदेश है। इस संदेश को कभी न भूलें, अपने भीतर चलने वाले युद्ध को चालू रखें। संसार को ऐसे युद्धों की आवश्यकता है। इस बात की महत्ता को समझें और लगे रहें उस काम में जिसे आपने हाथ में लिया है। इस महामारी के कारण जो अड़चन आई है वह हमारे इस संकल्प के आगे नहीं टिकेगी। सम्पर्क और सातत्य बनाए रखें।

इस संवाद में संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने विगत 6 माह में हुए संघ कार्य एवं महामारी के कारण भौतिक सम्पर्कों के संभव न होने के बावजूद किए गए कार्यों की जानकारी दी। हम किस प्रकार संघ कार्य को जारी रख सकते है इसको लेकर जानकारी दी गई।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

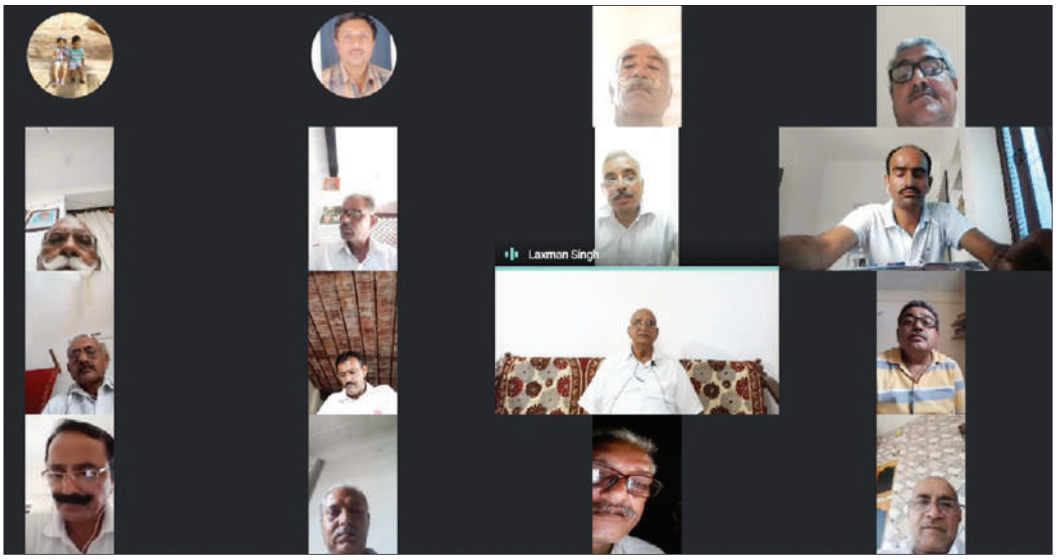

जयंती विशेष :

पूज्य नारायण जी रेड़ा

अभी हमने 30 जुलाई को पू. नारायणसिंह जी की जयंती मनाई। किसी महापुरुष की जयंती इसलिए मनाई जाती है कि वह हमें भी कुछ प्रेरणा प्रदान करे, हम साधारण मानव उनके पदचिह्नों पर चलकर कुछ प्रकाश अपने जीवन में भी अवतरित कर सकें। क्या पूज्य नारायणसिंह जी का जीवन इसीलिए अनुकरणीय है कि वे संघ के संघ प्रमुख बनें? वे जीवन भर तनसिंह जी के साथ उनकी सेवा में रहे? अपने घरेलू उत्तरदायित्व की बजाय अपने ध्येय को महत्व दिया या वे उस योग स्थली तक पहुंचे जहां पहुंचना प्रत्येक मानव की कामना है? हां ये सभी कारण भी जयंती मनाने के लिए कोई कम नहीं हैं, परन्तु मुझे जो एक कारण अन्दर तक छू गया वह है अपने मार्ग दृष्टा के मार्ग पर, ध्येय पर व उनके दर्शन पर एक बार समझ में आ जाने के बाद आंख मीच कर कूद पड़ना। संसार में ऐस बहुत कम अनुयायी होंगे जो इस प्रकार से अपना सर्वस्व अर्पण कर दे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'शह-मात का खेल और हवा में तैरती नैतिकता'

राजस्थान में इन दिनों शह मात का खेल जारी है। सत्तारूढ पार्टी में मुख्यमंत्री के खिलाफ बगावत हुई है और विपक्षी पार्टी अवसर का लाभ उठाने को लालायित है। राज्यपाल एवं विधानसभा अध्यक्ष के संवैधानिक पद को दोनों पक्ष अपने-अपने हिसाब से उपयोग कर रहे हैं। न्यायालय भी अपनी सक्रिय भूमिका में नजर आ रहा है। इस प्रकार राजस्थान की राजनीति का पारा चढ़ा हुआ है, उमस सबको पसीने से तरबतर कर रही है लेकिन मानसून के बादल किधर बरसेंगे, कुछ स्पष्ट नहीं है। हर व्यक्ति अपने-अपने तरीके से कयास लगा रहा है, सरकार बाड़े में बंद होकर बाड़े के बाहर की व्यवस्था संभाल रही है। कानून और व्यवस्था के लिए स्थापित राज्य की एजेंसियां राज्य की सत्ता बचाने को तो केन्द्र की एजेंसियां राज्य की सत्ता को बेदखल करने को सत्ताधीश व्यक्तियों के व्यक्तिगत साधनों के रूप में प्रयुक्त हो रही हैं। सब एक-दूसरे को निपाटने में लगे हुए हैं अपने-अपने दलों में अपनी सत्ता के लिए चुनौती बनने वाले नए नेतृत्व को इस बहाने निपटा रहे हैं और मतदाता अपनी-अपनी पसंद को सही गलत पर प्राथमिकता देते हुए पुष्ट करने में लगा है। संविधान के प्रावधानों की सभी अपने अपने पक्ष में समीक्षा कर रहे हैं और अपने पक्ष को सही सिद्ध करने का पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन ऐसा क्या पहली बार हो रहा है? इस व्यवस्था में यह रोज का खेल है। राज्यपाल महोदय का उपयोग कर या विधायकों को तोड़कर सत्ता हथियाना इस व्यवस्था में प्रारम्भ से चलता रहा है और अब यह पार्ट ऑफ प्रोसस बन गया है। इसलिए बहुत आश्चर्य भी नहीं होता लेकिन इस शह मात के अनैतिक कार्य में लिप्त लोग अपने बयानों में जब नैतिकता की बातें करते हैं तो घिन सी होती है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'बदलते दृश्य' में खंडेला के केसरीसिंह का उल्लेख किया है। इस बार हम उनके बारे में जानेंगे।

राजा बहादुर सिंह की मृत्यु उपरान्त उनके ज्येष्ठ पुत्र केसरीसिंह वि.सं. 1740 में खंडेला के राजा बने। शासक बनने के बाद वे शाही सेवा में दक्षिण भेजे गए जहां अनेक युद्धों में उन्होने अपनी वीरता से शत्रुओं पर विजय प्राप्त की। उस समय आगरा के आसपास राजाराम ने विद्रोह कर उपद्रव मचा रखा था। इस विद्रोह का दमन करने के लिए औरंगजेब ने राजा केसरीसिंह को भेजा। केसरीसिंह का राजाराम के विरुद्ध यह अभियान 1744 ई. में हुआ। इस युद्ध में राजाराम मारा गया और विद्रोह का दमन कर दिया गया, लेकिन राजा केसरी सिंह का औरंगजेब की धार्मिक नीतियों के कारण शीघ्र ही शाही सेना से मोह भंग हो गया। धर्मान्ध शासक औरंगजेब मिर्जा राजा जयसिंह, महाराजा जसवन्त सिंह, महाराणा राजसिंह के भय से अपने शासन काल के प्रारम्भ में अपनी धार्मिक कुचेष्टाओं को कार्यान्वित नहीं कर पाया। लेकिन इन राजपूत राजाओं की मृत्यु के बाद औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता खुलकर सामने आ गई।

बलपूर्वक धर्म परिवर्तन, मंदिरों को तोड़ा जाना, गो-वध आदि देखकर राजा केसरीसिंह व्यथित हो उठे। औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता का विरोध करते हुए केसरी सिंह ने शाही कर देना बंद कर दिया और शाही परगनों में धावा मारने लगे। शाही थानों पर उनके छापामार आक्रमणों ने मुगलों को थाना छोड़कर भागने के लिए मजबूर कर दिया। राजा केसरीसिंह से भयभीत नारनौल के फौजदार, अजमेर के सूबेदार और राव जगतसिंह मनोहरपुर द्वारा बादशाह औरंगजेब से शिकायत की गई कि केसरीसिंह शाही आदेशों का उल्लंघन करता है शाही परगनों पर आक्रमण कर शाही खजाने को लूटता है। औरंगजेब ने स्वयं लंबे समय से केसरी सिंह की शक्ति को नष्ट करना चाहता था। उसने अजमेर के सूबेदार सैयद अब्दुल्ला को विशाल सेना के साथ केसरीसिंह की शक्ति को समूल नष्ट करने की आज्ञा दी। शाही आज्ञा मिलते ही सैयद अब्दुल्ला ने सेना सहित अजमेर से खंडेला की ओर प्रस्थान किया। शाही सेना की चढ़ाई के समाचार मिलने पर राजा केसरीसिंह ने युद्ध की तैयारियां आरम्भ की। अब्दुल्ला खां ने संधि वार्ता के बहाने राजा केसरीसिंह को शाही खेमे में बुलाकर बन्दी बनाने की योजना तैयार की, इसके लिए उसने अपने पुत्र नुरुद्दीन को टोडा से केसरीसिंह के पास भेजा। राजा केसरीसिंह ने उसका यथोचित सम्मान किया, केसरीसिंह के विश्वस्त सलाहाकार बाय और रींगस के ठाकुर तेजसिंह नुरूद्दीन के आने का मन्तव्य समझ गए। उनकी सलाहनुसार राजा केसरीसिंह ने संधिवार्ता के प्रस्ताव को अस्वीकार कर नुरुद्दीन को लौटा दिया। शेख अब्दुल्ला से मुकाबला करने के लिए राजा केसरीसिंह ने शेखावाटी के अपने समस्त भाई-बंधुओं, रिश्तेदारों को युद्ध का निमंत्रण भेजा। केसरीसिंह के रण-निमंत्रण पर सभी शेखावात शाखाओं के योद्धा सामेर नामक ग्राम में इकट्ठे हुए, जिनमें कासली के राव जगतसिंह, उनका पुत्र दीपसिंह, दौलतसिंह दूजोद उदयसिंह गुणाटु, कनकसिंह अनोखू, जुंझारसिंह गुढा के पुत्र दीपसिंह, जयरामसिंह, झाझड के स्वामी पुरुषोतम सिंह के पुत्र पृथ्वीसिंह आदि प्रमुख थे। राजा केसरीसिंह द्वारा उन्हें परिस्थिति से अवगत कराया गया। राजा केसरीसिंह ने कहा कि यदि हमारे होते गायों को काटा जाए, मलेच्छों द्वारा स्त्रियों का अपमान हो, मंदिरों को तोड़ जाए, वेद मंत्रों का गूंजन बंद करवा दिया जाए, हिन्दूओं को जनेऊ तोड़ने के लिए मजबूर किया जाए तो अपने क्षत्रियत्व को धिक्कार है। केसरी सिंह के इन वचनों को सुनकर वीरों की आंखों में खून उतर आया। निश्चय किया गया कि शाही सेना का मुकाबला रणक्षेत्र में अंतिम समय तक किया जाएगा। राजा केसरीसिंह अपनी सेना लेकर देवली गांव पहुंचे और वहीं अपना सैन्य पड़ाव रखा। सैयद अब्दुल्ला खां ने भी अपनी सेना सहित आकर हरिपुरा में सैन्य पड़ाव रखा। आसोज सुदी 13 वि.सं. 1754 की प्रातःकाल नित्यकर्मों से निवृत हो, ब्राह्मणों-चारणों को दान देकर केसरिया धारण कर राजा केसरीसिंह अपने भाई बंधुओं के साथ स्वधर्म पालन का एक नया अध्याय लिखने के लिए युद्ध क्षेत्र में आ डटे। एक और स्वतंत्रता और अपने स्वाभिमान के लिए सर्वस्व उत्सर्ग के लिए छोटे से भू-भाग शेखावाटी के वीर राजपूत तो दूसरी और धर्मान्ध बादशाह की पाशविक शक्ति के मद में चूर विशाल मुगलसेना थी। राजा केसरी सिंह अपने भाई उदयसिंह के साथ सेना के मध्य में थे तो उनके दांयी ओर सुखरूपसिंह मेड़तिया (बिडाद के ठाकुर व केसरीसिंह के बुआ के पुत्र) और फतेहसिंह दूजोद थे और बायीं और भोजराज जी और उग्रसेन जी के शेखावत बंधु थे। युद्ध प्रारम्भ होते ही सुखस्वरूप सिंह मेड़तिया ने अपने साथियों सहित शाही सेना पर तीव्र आक्रमण किया तो दूसरी ओर से जगतसिंह कासली ने आक्रमण किया। भोजराज जी और उग्रसेनजी की संतानों ने शाही सेना के दाये भाग में जानुद्दीन खां पर आक्रमण कर दिया। जगतसिंह कासली ने अद्भुत रण कौशल दिखाया, घमासान युद्ध में जगतसिंह की तलवार ने सैयद अब्दुल्ला के पुत्र नुरुद्दीन को दो हिस्सों में विभक्त कर दिया। ये दृश्य देखकर और राजपूतों ने तीव्र आक्रमण से शाही सेना के पांव उखड़ गए और वो युद्ध क्षेत्र से भाग खड़ी हुई। पर सैयद अब्दुल्ला ने भागती शाही सेना का उत्साह बढ़ाया साथ ही उसका बड़ा पुत्र भी और शाही सेना के साथ उससे आ मिला। जिससे भागती शाही सेना वापिस युद्ध क्षेत्र में आ गई। सागर की विशाल लहरों के जैसे विशाल शाही सेना उमड़ती आ रही थी। युद्ध क्षेत्र में वीरों के रक्त से मिट्टी दल-दल में बदल गई थी। सुखरूपसिंह मेड़तिया मुहम्मद खां को मारते हुए स्वयं भी वीरगति को प्राप्त हो गए। मातृभूमि की रक्षार्थ संख्या में नगण्य होते हुए भी वीर राजपूत अद्भुत रण-कौशल का प्रदर्शन करते हुए शत्रुओं को काटते हुए चिर निद्रा की गोद में जा रहे थे। अद्भुत पराक्रम दिखाते हुए राजा केसरी सिंह दल के जिस भाग में जाते वहां त्राहि-त्राहि मचा देते। ऐसा लग रहा था जैसे उनकी तलवार शत्रुओं के रक्त के लिए सदियों से प्यासी हो। राव जगतसिंह कासली, ठाकुर तेजसिंह बाय, कुंवर पृथ्वीसिंह झाझड़, कुंवर दीपसिंह गुढा, सुखसिंह गौड़ और अनेकों वीर स्वधर्म का पालन करते हुए कीर्ति शेष छोड़कर अनन्त में मिल चुके थे। राजा केसरीसिंह भी क्षत-विक्षत हो चुके थे, विजय की कोई संभावना नहीं थी तब राजा केसरीसिंह को कुछ साथियों ने युद्ध भूमि को त्याग कर खंडेला जाने की सलाह दी, उस पर केसरीसिंह का प्रत्युतर था कि युद्ध क्षेत्र से भाग कर मैं अपनी कौम पर ऐसा कलंक नहीं लगा सकता जिसे आने वाली सैंकड़ों पीढ़ियां भी धो ना सके। लेकिन राजा केसरीसिंह के अनेक साथी युद्ध क्षेत्र को छोड़कर चले गए। अपने शेष साथियों के साथ शरीर के खण्ड खण्ड होने तक केसरीसिंह शत्रुओं का संहार करते रहे। अन्त में उन्होंने मोदिनी माता को अपने रक्त और मांस से पिण्डदान अर्पित किया और रणांगण में वीरगति प्राप्त कर सूर्य मंडल को भेदकर उस परम ज्योति में विलीन हो गए।

खींवसिंह सुल्ताना, सन्दर्भग्रंथ : केसरीसिंह गुणरासो (पं. कवि हरिनाम उपाध्याय)

राष्ट्रकूट वंश

कृष्ण प्रथम के बाद उसका बड़ा पुत्र गोविन्द द्वितीय शासक बना, अपने पिता के शासन काल में युवराज रहते हुए उसने अनेक युद्धों में विजय प्राप्त की थी परन्तु शासक बनने के बाद वह विलासी, अकर्मण्य और प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति उदासीन हो गया जिससे राज्य में अव्यवस्था फैल गई, ऐसी परिस्थितियों में उसके छोटे भाई ध्रुव, जो कि इतिहास में ध्रुव धारावर्ध नाम से प्रसिद्ध हुआ, ने गोविन्द द्वितीय पर आक्रमण किया। युद्ध में गोविन्द द्वितीय की पराजय हुई और ध्रुव राष्ट्रकूट साम्राज्य का शासक बना। राष्ट्रकूट शासक बनने के बाद गोविन्द द्वितीय के सहयोगियों का दमन कर उसने अपनी स्थिति सुदृढ़ कर विजय अभियान प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम उसने गंगवाड़ी के शासक शिवमार द्वितीय को परास्त कर उसके राज्य को राष्ट्रकूट साम्राज्य में मिला लिया। इसके बाद उसने कांची के पल्लव शासक दन्तिवर्मा को परास्त किया, पराजित दन्ति वर्मा ने अनेक उपहार भेंट कर अधीनता स्वीकार की। ध्रुव ने वेंगी के चालुक्य शासक विष्णुवर्धन चतुर्थ को भी परास्त किया। ध्रुव की इन सभी विजयों का उल्लेख राधनपुर लेख में मिलता है। इन सभी विजयों से ध्रुव सम्पूर्ण दक्षिण पथ का एकमात्र शासक बन बैठा। दक्षिण में राष्ट्रकूट साम्राज्य को सुदृढ़ करने के बाद ध्रुव ने उत्तर भारत की राजनीति में हस्तक्षेप करने का निश्चय किया। इस समय उत्तर भारत की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले कन्नौज पर एक दुर्बल शासक इन्द्रायुध शासन कर रहा था। कन्नौज पर अधिकार के लिए उत्तर भारत की दो प्रमुख शक्तियां प्रतिहार (मालवा व राजपुताना) तथा पाल (बंगाल) संघर्षरत थे। ध्रुव ने विन्ध्यवर्पत पार कर पहले प्रतिहार शासक वत्सराज को परास्त किया, युद्ध में परास्त वत्सराज राजपूताने की ओर चला गया। उसके उपरान्त उसने गंगा-यमुना के दोआब में पाल शासक धर्मपाल को परास्त किया जिसकी जानकारी संजन के लेख से मिलती है। विजयी ध्रुव अतुल सम्पति के साथ पुनः दक्षिण लौट गया, उसने राष्ट्रकूट शक्ति का विस्तार उत्तर भारत तक कर दिया, वह राष्ट्रकूट वंश के महानतम शासकों में से एक था। उसने 780 ई. से 793 ई. तक शासन किया था। ध्रुव के बाद उसका सबसे योग्य पुत्र गोविन्द तृतीय शासक बना, जिसे ध्रुव ने अपने जीवन काल में ही उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। गोविन्द तृतीय के शासक बनने के बाद उसके बड़े भाई स्तम्भ ने सत्ता के लालच में बारह राजाओं का एक संघ बनाकर गोविन्द तृतीय पर आक्रमण किया, इस संघ में पल्लवराज दंतिवर्मा, नलोम्बवड़ी का चारुपोन्नेर तथा बनवासी का कतिमर प्रमुख था। राजाओं के इस संघ को गोविन्द तृतीय ने परास्त कर दिया लेकिन अपने भाई स्तम्भ के साथ उदारता का व्यवहार करते हुए उसे गंग प्रदेश का राजा बना दिया। इसके उपरान्त अपने छोटे भाई इन्द्र को राजधानी की रक्षा का दायित्व सौंप कर अपने पिता की भांति उसने भी उत्तर भारत की ओर अभियान किया। पहले उसने प्रतिहार शासक नागभट्ट के विरुद्ध अभियान किया और बुन्देलखण्ड के किसी स्थान पर उसे परास्त किया। गोविन्द तृतीय की शक्ति से भयाक्रान्त पाल शासक धर्मपाल तथा कन्नौज शासक चक्रायुध ने उसके सम्मुख हथियार डाल दिए। इसके बाद अपने पिता की भांति वह पुनः दक्षिण लौट गया। उसकी अनुपस्थिति का लाभ उठाकर दक्षिण के शासकों ने उसके विरुद्ध एक संघ बनाया जिसमें पल्लव, पाण्डय, चोल, केरण तथा पश्चिमी गंग शासक सम्मिलित थे। गोविन्द तृतीय ने तुंगभद्रा नदी के तट पर इस संघ को परास्त किया। उसकी शक्ति से भयभीत लंका के शासक ने उपहारों सहित एक दूत मण्डल को भेजा। गोविन्द तृतीय ने उत्तर में हिमालय से दक्षिण में कन्याकुमारी तक, पश्चिम में अरब सागर से पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक अपनी विजय पताका फहरा दी। उसके शासन काल में राष्ट्रकूट साम्राज्य उन्नति के शिखर पर था। वह प्राचीन भारत के योग्यतम साम्राटों और सेनानायकों में से एक था। उसने 793 ई. से 814 ई. तक शासन किया।

'कहीं महामारी का शिकार न बन जाएं'

नियमित रूप से शाखा लगे और उसमें हम जाएं, उसमें नियमित शामिल हो, यही श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना है। यह नहीं रहा तो हमारा साधना का अभ्यास टूट जाएगा। कोरोना वैश्विक महामारी के कारण हमारी भौतिक दूरियां बढ़ी है, यदि ज्यादा समय गुजर गया तो कहीं हमारे बीच की दूरियां बढ़ न जाएं क्योंकि सम्पर्क बनाए रखना हमारे लिए आवश्यक है। इस प्रकार कहीं हम इस महामारी के शिकार न बन जाएं, कहीं हमारी दूर रहने की आदत न पड़े जाए और हमारे मन में प्रश्न उठने लगे की संघ चल रहा है या नहीं, इसलिए सम्पर्क बना रहना आवश्यक है। बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में 25 जुलाई को बाड़मेर संभाग की संभागीय बैठक में आए स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही।

उन्होंने कहा कि प्रारम्भ में लॉकडाउन के समय हमने सरकार के द्वारा लगाए सभी प्रतिबंधों का पालन किया और करना भी चाहिए क्योंकि हम एक जिम्मेदार नागरिक हैं। फिर छूट मिली तो आप लोगों को मिलने आने की छूट दी और अब और अधिक छूट मिली है तो इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। हमें अब पहले की तरह जहां सरकारी निर्देशों की पालना करते हुए शाखा लगा सकते हैं, दैनिक शाखाएं लगाना प्रारम्भ करना चाहिए। जयपुर में संघशक्ति की शाखा प्रारम्भ हो चुकी है। जो पहले शाखा में आया करते थे उनको लाना प्रारम्भ करना चाहिए। जो नए लोग जुड़ सकते हैं, उनसे भी सम्पर्क करना चाहिए। इससे आपको लगेगा कि हम काम कर रहे हैं, यह आपके हित में होगा, संघ के हित में होगा और संघ का हित संसार के हित के लिए ही है। माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हमारे पूर्वज धर्म की रक्षा के लिए प्राणों की परवाह नहीं करते थे लेकिन हमें तो प्राण देने नहीं बल्कि लोगों के प्राण बचाने हैं और उसके लिए संघ का प्रचार प्रसार अत्यन्त महत्वपूर्ण है, आवश्यक है। यह बात हम सबको महसूस करनी होगी और जहां से भी प्रेरणा मिलती है, लेनी होगी। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि शारीरिक अस्वस्थता के कारण अब यात्राएं नहीं कर पाता लेकिन आप सबसे मिलने की चाह सदैव बनी रहती है। मैं चाहता हूं कि आप सब जैसे-जैसे समय मिलता रहे, आते रहें, मिलते रहें। यहां रुकने की व्यवस्था है, कुछ समय रुक भी सकते हैं। बैठक में संभाग में आगामी दिनों में किए जाने वाले संघ कार्य की योजना बनाई गई एवं शाखाएं प्रारम्भ करने के लिए उपयुक्त स्थानों को चिह्नित किया गया। पूज्य नारायणसिंह जी जयंती के वर्चुअल कार्यक्रम में अधिकतम लोगों को जोड़ने का लक्ष्य लिया गया।

संघ प्रमुख श्री का जैसलमेर प्रवास

संघ प्रमुख श्री 14 जुलाई को जैसलमेर संभाग कार्यालय 'तनाश्रम' प्रवास पर पधारे। स्थानीय स्वयंसेवकों को पूर्व ही सूचना कर दी गई थी, यहां पधारने का समाचार पाकर संघ प्रमुख श्री से सान्निध्य लाभ लेने के लिए जैसलमेर शहर में रहने वाले

स्वयंसेवक बन्धु उपस्थित रहे। दो दिवसीय प्रवास के दौरान चर्चाओं का दौर चलता रहा। प्रातः अल्पाहार के बाद संघ प्रमुख श्री के निर्देशानुसार कार्यालय में पूर्व में लगाये गए पोधों को व्यवस्थित किया गया व वहां खाली पड़े स्थान पर नए पोधे लगाए गए। दोपहर भोजन के बाद वरिष्ठ स्वयंसेवकों द्वारा अपने संघ जीवन के अनुभवों को साझा किया गया। सायंकालीन चर्चा के समय संघ प्रमुख श्री ने कोरोना वरदान या अभिशाप के संदर्भ में स्वयंसेवकों से उनके विचार जाने। वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगा सिंह तेजमालता ने कहा कि संसार तेज गति से भाग रहा है। हम अगर प्रकृति के विरुद्ध कुछ करेंगे तो प्रकृति उसका जवाब अवश्य देगी। वरिष्ठ स्वयंसेवक हरि सिंह जी ने कहा कि संसार की उहापोह में एक जगह बैठ कर के चिंतन करने का अवसर मिला, वर्चुअल शाखा भी इसका माध्यम बनी। इसके अलावा भी स्वयंसेवकों ने अपने विचार व्यक्त किए। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि स्वयं को जानने और पहचानने का ईश्वर ने अच्छा अवसर दिया है, यह संसार ईश्वर की देन है। ईश्वर की शक्तियों को चुनौती देने का अर्थ है विनाश। अस्त्र शस्त्र बनाए जा रहे हैं महत्वकांक्षा के जाल में फंसकर हर देश दूसरे से आगे जाना चाहता है, इस तरह से सभी विनाश की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। हम हमारे अंदर के तत्व को पहचानें, भीतरी ज्ञान को प्रकाशित करें। भौतिक दूरियों का पालन करते हुए शाखाएं लगाने के बारे चर्चा की गई। आए हुए स्वयंसेवकों के लिए भोजन की व्यवस्था संघ कार्यालय में ही की गई थी। भोजन करने के उपरांत सभी ने कार्यालय में यथायोग्य श्रमदान किया। कोरोना के बाद सभी का मिलन नहीं हो पाया इसलिए इस मिलन से वापिस सक्रियता का माहौल बना, 17 जुलाई दोपहर भोजन उपरांत संघ प्रमुख श्री ने बाड़मेर के लिए प्रस्थान किया।

अहमदाबाद ग्रामीण प्रांत की बैठक

अहमदाबाद ग्रामीण मंडल की बैठक 27 जुलाई अपराह्न 3 बजे संभाग प्रमुख दीवानसिंह काणेटी के आवास पर आयोजित हुई जिसमें सभी उपस्थित स्वयंसेवकों ने प्रति स्वयंसेवक 20 परिवारों को 30 जुलाई को आयोजित वर्चुअल जयंती कार्यक्रम से जोड़ने का लक्ष्य लिया। 2 अगस्त को केन्द्रीय सहयोगियों के साथ होने वाली गुगल मीट के बारे में भी चर्चा की गई। सभी उपस्थित स्वयंसेवकों ने अगस्त माह में संघ साहित्य की एक-एक पुस्तक पढ़ने का लक्ष्य लिया। संयोमा राशि जमा करवाने को लेकर भी चर्चा की गई। रक्षाबंधन और दुर्गादास जयंती को लेकर भी चर्चा की गई। रक्षा बंधन के दिन अपने घर पर यज्ञ कर यज्ञोपवित धारण करने का लक्ष्य दिया गया।

गुगल मीट पर संभागवार समीक्षा बैठकें

19 जुलाई को माननीय संघ प्रमुख श्री के साथ संघ के सहयोगी वर्ग की वर्चुअल बैठक में हुए निर्णय अनुसार संभागवार समीक्षा बैठकें प्रारंभ हुई। संघ के केन्द्रीय सहयोगियों के साथ संभागों के स्वयंसेवकों एवं दायित्वधीन सहयोगियों की इन बैठकों में विगत कुछ माह में हुए संघ कार्य की समीक्षा की गई एवं अगस्त माह के लिए करणीय कार्यों के लक्ष्य लिए गए।

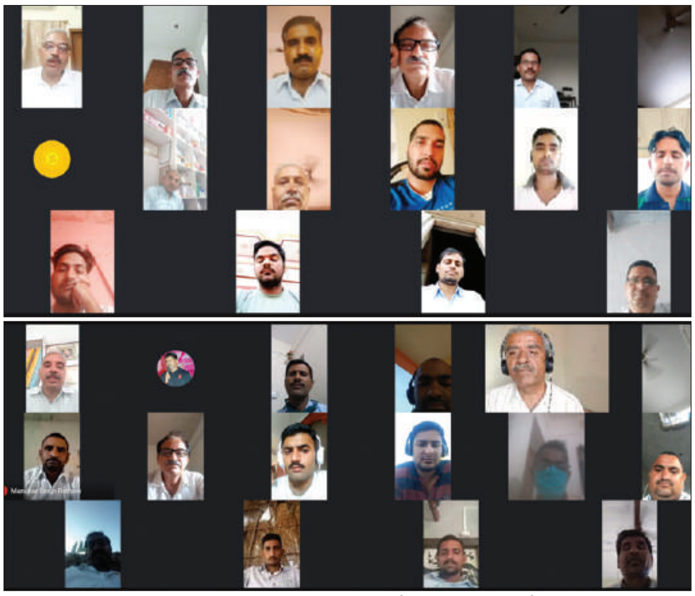

इन बैठकों में स्वयंसेवकों से संवाद करते हुए संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने कहा कि संघ का कार्य बीज को बचाना है। यदि बीज बचा रहा तो अनुकूल परिस्थितियां आने पर वह अंकुरित, पल्लवित एवं पुष्पित भी होगा। इसलिए हमारा पूरा कार्य क्षत्रियत्व के बीज को बचाकर रखना है। माननीय संघ प्रमुख श्री ने वर्चुअल बैठक में हमें निर्देश दिया है कि संपर्क का सातत्य बनाए बिना सक्रियता नहीं रहती और हमारे निष्क्रिय होने पर बीज को बचाने के संघ के अभियान में अवरोध उत्पन्न होगा। महामारी के कारण हमारे भौतिक सम्पर्क सीमित हो गए हैं और अभी कुछ माह तक यही स्थिति बने रहने की आशंका है। ऐसे में अपने आपको निष्क्रिय होने से बचाने के लिए हमें व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रयास जारी रखने हैं। संचालन प्रमुख ने कहा कि वर्चुअल माध्यम से हमारा सम्पर्क निरन्तर बना रहे इसके लिए हमें नियमित ऐसी बैठकें करनी हैं। अपने आपको संघ के दर्शन से जोड़े रखने के लिए संघ साहित्य की किसी एक पुस्तक का आगामी माह में पठन करना है। केन्द्रीय वर्चुअल शाखा, घरेलू शाखा या प्रांत स्तर पर वर्चुअल शाखा लगाकर हमें प्रतिदिन एक घंटा शाखा के लिए आवश्यक रूप से देना है। प्रत्येक स्वयंसेवक को प्रति 15 दिन में एक बार अपने संभाग प्रमुख से फोन पर बात अवश्य करनी है। पूज्य नारायणसिंह जी की जयंती पर आयोजित होने वाले वर्चुअल कार्यक्रम के लिए अधिकतम परिवारों से सम्पर्क करना है। मैदानी शाखाएं भी लगानी प्रारंभ करनी है। आगामी माह में रक्षा बंधन, दुर्गादास जयंती, श्री कृष्ण जन्माष्टमी आदि पर्व आ रहे हैं इन्हें भी शाखा स्तर पर मनाना है। हमें वह सब करना है जिससे हमें यह संतुष्टि हो कि मैं सक्रिय हूं और संघ कार्य कर रहा हूं।

संभागों की इन समीक्षा बैठकों में 21 जुलाई को जयपुर संभाग, 22 जुलाई को जालोर संभाग, 24 जुलाई को जोधपुर संभाग, 26 जुलाई को बीकानेर संभाग की बैठक आयोजित हुई। 27 जुलाई को बालोतरा संभाग, 28 जुलाई को नागौर संभाग एवं 29 जुलाई को मेवाड़-मालवा-वागड़ संभाग की बैठकें रखी गई। इन बैठको में संबंधित संभाग प्रमुख ने अपने संभाग में हुए संघ कार्य की जानकारी दी एवं अगस्त माह के लिए उनके संभाग के स्वयंसेवकों द्वारा लिए गए लक्ष्यों की जानकारी दी। प्रांत प्रमुखों ने भी अपने अपने प्रांत की जानकारी साझा की। संघशक्ति, पथप्रेरक के ग्राहक बनाने को लेकर भी चर्चा की गई। बैठकों में प्रेमसिंह रणधा, गजेन्द्रसिंह आऊ, महेन्द्रसिंह पांची आदि केन्द्रीय कार्यकारी एवं शाखा विभाग के प्रमुख भी शामिल हुए।

संपादकीय

महाभारत को जीतने के लिए अर्जुन चाहिए?

भगवान श्रीकृष्ण ने अपने जीवन का लक्ष्य परित्राणाय साधूनाम विनाषाय च दुष्कृताम व धर्म संस्थापनार्थाय बताया। इसके लिए उन्होंने आजीवन उद्यम किया। महाभारत का युद्ध उनके इस लक्ष्य को अर्जित करने के लिए सबसे बड़ा अनुष्ठान था और उस अनुष्ठान में उनके प्रथम सहयोगी अर्जुन थे। हमारे सामने प्रश्न उठना चाहिए कि अर्जुन ही प्रथम सहयोगी क्यों थे? युधिष्ठर क्यों नहीं बने? भीम, नकुल या सहदेव क्यों नहीं बने? भीष्म, द्रोण या कर्ण को उन्होंने अपना सहयोगी क्यों नहीं बनाया? भीष्म व द्रोण को तो उनके हाथ में शस्त्र रहते कोई हरा ही नहीं सकता था फिर भी उन्हें सहयोगी क्यों नहीं बनाया? युधिष्ठर जैसे सत्यवादी या भीम जैसे बलवान की अपेक्षा अर्जुन को महत्व क्यों दिया? कर्ण जैसे दानवीर एवं अश्वात्थामा जैसे धनुर्धर के होते अर्जुन को वरीयता क्यों मिली? हमारे जेहन में उठे इन प्रश्नों के उत्तर इन्हीं प्रश्नों में निहित हैं और वे ही कारण है जिनके कारण वे भगवान कृष्ण के अपने जीवन लक्ष्य की पूर्ति में प्रथम सहयोगी नहीं बन सके। ऊपर हमने जिन महापुरुषों की चर्चा की है वे अपने अपने क्षेत्र में विशिष्ट योग्यताएं लिए हुए थे, उनकी ये विशिष्टताएं ही उनके भगवान कृष्ण के सहयोगी बनने में बाधक बनी। लेकिन क्या अर्जुन में कोई विशिष्टता नहीं थी? क्या संसार का श्रेष्ठतम धनुर्धर होना कोई विशिष्टता नहीं है? क्या उर्वशी जैसी अप्सरा का निमंत्रण सहज ही में ठुकरा देना विशिष्टता नहीं है? क्या अपनी तपस्या के बल पर भगवान शिव सहित समस्त देवगणों से दिव्यास्त्र हासलि करना विशिष्टता नहीं है? निश्चित रूप से विशिष्टता है और अर्जुन में ये सभी विशिष्टताएं थीं लेकिन फिर भी भगवान कृष्ण के सहयोगी बनने में उनकी विशिष्टताएं बाधक नहीं बनी जबकि भीष्म, द्रोण, कर्ण, युधिष्ठर, भीम आदि के लिए उनकी विशिष्टताएं बाधक बन गईं। भीष्म अपनी प्रतिज्ञा के बल पर भगवान को झुकाने का बल रखते थे लेकिन अपनी प्रतिज्ञा की विशिष्टता के कारण भगवान कृष्ण के प्रति सर्वात्मना समर्पित हो कौरवों का पक्ष नहीं त्याग सकते थे इसलिए सहयोगी नहीं बन पाए। भीम अधिकार पूर्वक उनको अपने मामा का पुत्र मानकर टोक सकते थे लेकिन अश्वत्थामा द्वारा नारायणस्त्र के संधान पर पीठ दिखाने के आदेश को नहीं मान सकते थे, इसलिए सहयोगी नहीं बन पाए। हालांकि युद्ध में पीठ न दिखाना एक विशिष्टता है लेकिन महाभारत का नायक बनने के लिए वह विशिष्टता अयोग्यता बन गई। लेकिन अर्जुन की कोई विशिष्टता उनको भगवान कृष्ण के प्रति समर्पित होने से नहीं रोक पाई क्योंकि वे विशिष्ट होते हुए भी अपने को उनके सामने सामान्य मानते थे। उनकी यह सामान्यता ही उनके लिए महाभारत का नायक बनने की योग्यता बन गई। इसीलिए वे भगवान कृष्ण के आदेश पर शिखंडी को ढाल बनाकर अपने पितामह पर बाण चलाने को तत्पर हुए। इसीलिए अपने प्रिय गुरु की हत्या करने पर धृष्टद्युम्न पर आए क्रोध को पी गए। इसीलिए निहत्थे कर्ण पर बाण चला सके और अपनी इसी सामान्यता के कारण वे भगवान कृष्ण के हर आदेश को मानते गए और महाभारत के नायक बन गए। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी समाज जागरण के लिए ऐसे ही नायकों की खोज करता है। पूज्य तनसिंह जी का पूरा दर्शन सामान्य को विशिष्ट बनाने का दर्शन है। उनके मार्ग का योग्य पात्र विशिष्ट की विशिष्टता नहीं बल्कि सामान्य की सामान्यता है। प्रायः लोग पूछते हैं कि संघ में समाज के विशिष्ट लोग क्यों नहीं आते तो उत्तर यही है कि संघ विशिष्ट के लिए नहीं बल्कि सामान्य के लिए है जो विशिष्टता के अहंकार से मुक्त रहकर संघ के निर्देशों की अनुपालना कर निरहंकारी विशिष्टता को हासिल कर सके। हालांकि संघ में अनेक विशिष्ट लोग दिखाई देते हैं लेकिन ये वे है जिन्होंने अर्जुन की तरह अपनी समस्त विशिष्टताओं को कृष्ण रूपी संघ को समर्पित कर दी है और संघ उनकी विशिष्टता को निरंहकारी बना गुणित कर रहा है। लेकिन जो अपनी विशिष्टता के साथ संघ की मुख्यधारा में बना रहना चाहता है वह ऐसा नहीं कर पाता क्योंकि उसकी उस विशिष्टता का भान उसके मिलन में बाधक बना रहता है और वह स्वयं ही इकाई रूप में अपनी रक्षा करता है। संघ के इतिहास एवं वर्तमान में ऐसे अनेक विशिष्ट लोगों के उदाहरण भरे पड़े हैं जो संघ से आकर्षित होकर साथ चलने में प्रवृत हुए लेकिन अपनी विशिष्टता के भान के कारण लंबे चल नहीं पाए या चल नहीं पा रहे है। उनकी अपनी विशिष्ट योग्यता का भान ही उनके आगे बढ़ने में बाधक बनता है और वे स्वयं भी अपनी उस विशिष्टता के भान के रक्षक बन जाते हैं। इसीलिए चाहे हम इतिहासकार हैं या साहित्यकार, चाहे हम नेता हैं या अभिनेता, चाहे हम अध्येता है या ज्ञानी, चाहे हम संविधानवेत्ता हैं या राजनेता, चाहे हम खिलाड़ी हैं या अधिकारी, हम जिस भी विशिष्टता के भान के साथ मिलन के मार्ग पर बढ़ना चाहते है, वह भान ही हमारे मिलन का बाधक बनता है। अपनी उस विशिष्टता की रक्षा के चक्कर में हम अपने अस्तित्व को व्यापक बनाने में बाधक बन जाते हैं और संघ जिस महाभारत का आयोजन कर रहा है उसके नायक बनने से वंचित हो जाते हैं।

खरी-खरी

आत्म बलिदान और हत्या

मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णाकुमारी को लेकर एक विवादास्पद टिप्पणी राजस्थान माध्यममिक शिक्षा बोर्ड की इतिहास की पुस्तक में की गई है। उसमें लिखा है कि पिंडारियों के दबाव में महाराणा भीमसिंह ने अपनी पुत्री की हत्या करवा दी थी। हालांकि यह घटना कोई गौरव बढ़ाने वाली घटना नहीं है और ना ही इस घटना में कुछ विशेष प्रेरणा जैसा कुछ है जिसके कारण इसे पाठ्यक्रम शामिल किया जाए। इस घटना से अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी घटनाएं उसी काल में अन्य भी अनेक हैं लेकिन राजस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा इस घटना को इतना अधिक स्पेस देकर पढ़ाया जाना विभाग के मुखिया की विकृत मानसिकता का द्योतक है। घटना यह थी कि कृष्णा कुमारी की सगाई जोधपुर के महाराजा से हुई। विवाह से पहले ही महाराजा की मौत हो गई इसलिए मेवाड़ के महाराणा ने अपनी पुत्री की सगाई जयपुर राजघराने में कर दी। जोधपुर वालों ने आपत्ति उठाई और इसी को लेकर विवाद हुआ। राजस्थान में उस काल में मराठों, पिण्डारियों आदि के अतिशय हस्तक्षेप के कारण पिण्डारियों ने इसमें हस्तक्षेप किया एवं महाराणा पर राजकुमारी का विवाह जोधपुर के तत्कालीन महाराजा से करने का दबाव बनाया। ऐसे में राजकुमारी कृष्णा कुमारी ने विष खाकर अपने प्राण त्यागे और विवाद के मूल कारण को ही समाप्त कर दिया। कुछ लोग कहते हैं कि पिंडारियों के दबाव में महाराणा भीमसिंह की भी पूरे मेवाड़ को पिंडारियों के प्रकोप से बचाने के लिए इसमें सहमति थी। हालांकि यह घटना हमारे तत्कालीन शासकों के निरर्थक संघर्ष एवं क्षुद्र अहंकार को प्रदर्शित करती है लेकिन इसमें कृष्णा कुमारी का बलिदान हत्या कैसे हो गया? यदि कोई व्यक्ति अपने पूरे राज्य की रक्षा के लिए अपना आत्म बलिदान देता है तो इसे हत्या जैसे ओछे शब्द से कैसे संबोधित किया जा सकता है? हालांकि तथ्य इस बात की पुष्टि नहीं करते लेकिन फिर भी यदि महाराणा की इसमें सहमति मान लेवें तो भी सम्पूर्ण राज्य की रक्षा के लिए अपने परिवार के एक सदस्य के बलिदान को हत्या कहकर संबोधित करना क्या उस बलिदान का अपमान नहीं है? लेकिन जिन लोगों के लिए बलिदान शब्द के मायने बदल गए हैं उनके लिए इन बातों का कोई महत्व नहीं रहता। शिक्षा विभाग राजस्थान के राजनीतिक मुखिया एवं नए नवेले कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष प्रेस को संबोधित करते हुए कह रहे थे कि हां मेरे लिए प्रताप की अपेक्षा वह परिवार महान है जिसमें इंदिराजी और राजीव जी शहीद हुए। मैं उन दोनों हुतात्माओं के प्रति उनके देश के लिए कार्यों के प्रति पूर्ण सम्मान प्रकट करते हुए निवेदन करना चाहूंगा कि उन्होंने आत्म बलिदान नहीं किया बल्कि उनकी हत्या की गई थी। उनकी वह हत्या आत्म बलिदान किसी भी कोण से नहीं थी। सुरक्षा के संपूर्ण बंदोबस्त के बावजूद वे अलगाववादियों के शिकार बने थे और उनकी हत्या हुई थी। ऐसे में उनकी उस मौत को ही केवल महानता का मानक माना जाता है तो कश्मीर के अनेक परिवारों के नौनिहाल ऐसी हत्याओं के शिकार हुए हैं। पंजाब के अलगाववाद के काल में ऐसी हजारों हत्याएं हो चुकी हैं। पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री बेअंतसिंह की मौत भी ऐसी ही घटना के कारण हुई और समाचार पत्रों में बेअंतसिंह की हत्या ही छपा था। हम आज भी यह पढ़ते है कि इंदिराजी की हत्या कर दी गई। राजीव जी की हत्या कर दी गई। इससे भी बढ़कर हम यह भी कहते सुनते और पढ़ते हैं कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई थी। इसका अर्थ यह नहीं है कि उनका योगदान देश के लिए कम था या उनका सम्मान कम हो जाता है। राष्ट्र के लिए उनके योगदान का पूर्ण सम्मान करते हुए भी उनके देहावसान का आत्म बलिदान नहीं कहा जा सकता। इसलिए केवल अपनी कुंठित मानसिकता एवं चापलूसी के बल पर पद प्राप्त करने की प्रवृत्ति के कारण भले ही हम किसी भी बलिदान को ओछे शब्दों में प्रकट कर अपने नैतिक दिवालियेपन का परिचय देवें लेकिन ऐसे नैतिक दिवालिये लोगों द्वारा बांटे गए प्रमाण-पत्र यह राष्ट्र वर्षों से अस्वीकार करता रहा है और आगे भी करता रहेगा। भारतीयता की यह विशेषता है कि वह हर वक्तव्य के पीछे के कारण को खोजने का प्रयत्न करती है और देखती है कि किस सद्प्रवृत्ति या दुष्प्रवृत्ति से प्रेरित होकर यह वक्तव्य दिया जा रहा है। उसी के आधार पर उस वक्तव्य का मूल्यांकन भी करती है। हालांकि प्रकट में ऐसा लगता है कि चौतरफा आक्रमणों ने भारत की भारतीयता का क्षरण किया है लेकिन फिर भी राष्ट्र में व्याप्त सद्वृत्तियां उसकी जड़ों का निरन्तर पोषण कर रही हैं और वही पोषण उसे जीवित रखे हुए है। इसीलिए जो लोग चंगेज खां और तैमूरलंग को महान कहते हैं ,जो लोग अपने पिता को पीने के पानी के लिए भी तरसाने वाले औरंगजेब में भी महानता ढूंढते हैं, जिनके लिए अपने संरक्षक की हत्या कर उसी की पत्नी से विवाह करने वाला अकबर महान है वे बलिदान को हत्या और हत्या को बलिदान कहे तो क्या आश्चर्य है?

शाखामृत

कोरोना संकट के कारण उत्पन्न परिस्थिति के कारण वर्चुअल शाखा का प्रारंभ 13 मई को किया गया जो निरंतर जारी है। इसके माध्यम से वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी तथा अजीतसिंह जी धोलेरा द्वारा पूज्य श्री तनसिंह जी की पुस्तक 'साधक की समस्याएं' तथा 'गीता और समाजसेवा' पर चर्चा की जा रही है। 12 जुलाई से 28 जुलाई तक की शाखा में मिला मार्गदर्शन का विवरण प्रस्तुत है :

वर्चुअल शाखा में '**साधक की समस्याएं**' पुस्तक के दसवें प्रकरण 'श्रद्धा का भ्रम' पर आगे चर्चा करते हुए **माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी** ने बताया कि श्रद्धा एक असाधारण गुण है। श्रद्धा का अर्थ है सत्य को धारण करने की क्षमता। श्रद्धा कोई व्यापार की वस्तु नहीं है और यदि कोई व्यक्ति फल के लिए श्रद्धा करता है तो वह धोखेबाज है। स्नेह, विश्वास और सहयोग से भी श्रद्धा कहीं अधिक श्रेष्ठ उपलब्धि है। बिना वास्तविक श्रद्धा के सच्चा सन्तोष व शांति भी प्राप्त नहीं हो सकते। कभी ऐसा अवसर आता है कि हमें लगता है कि हमारी श्रद्धा लड़खड़ा गई है। वास्तव में वह श्रद्धा नहीं श्रद्धा का भ्रम ही था क्योंकि सच्ची श्रद्धा कभी खंडित नहीं हो सकती। श्रद्धा के भ्रम का तो खंडन होना ही चाहिए ताकि हम सच्ची श्रद्धा तक पहुंच सकें। यथार्थ श्रद्धा को प्राप्त करने का अर्थ है स्थायी आनंद को प्राप्त करना। सभी प्रकार के भ्रम और संशय के हटने पर ही श्रद्धा का उदय होता है और इसके साथ ही एक आनंदमय, मंगलमय और चिन्मय प्रेरणा का हमें अनुभव होने लगता है। व्यक्तित्व में कर्म की तेजस्विता झलकने लगती है, शिकायतें मिट जाती हैं और हमें जीवन-संघर्ष में विजयी होने का दृढ़ विश्वास प्राप्त होता है। श्रद्धा हमारे जीवन में परमेश्वर से मिलने की तीव्र उत्कंठा को जन्म देती है, इसके साथ ही साधक जीवन की पुकार का भी जन्म होता है। श्रद्धा के उदय के साथ ही मानसिक और शारीरिक समस्याएं सदा के लिए समाप्त हो जाती हैं और साधक आध्यात्मिक जगत में प्रवेश करता है जहां उसे नवीन प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

शाखा की अगली कड़ियों में पुस्तक के तेरहवें प्रकरण 'अभीप्सा के फीके रंग' पर चर्चा करते हुए महावीर सिंह जी ने कहा कि साधक बनने के लिए भी कुछ योग्यताएं अनिवार्य हैं। जिस प्रकार एक बहरा व्यक्ति संगीत नहीं सीख सकता, अंधा व्यक्ति चित्रकारी नहीं कर सकता उसी प्रकार साधक की अनिवार्य योग्यताएं न रखने वाला व्यक्ति साधना नहीं कर सकता। साधना के लिए सबसे आवश्यक शर्त उसका स्वेच्छापूर्वक अंगीकृत होना है अर्थात साधना का आत्मस्वीकृत होना अनिवार्य है। चूंकि मनुष्य एक चेतन प्राणी है इसीलिए उसके ऊपर किया जाने वाला शुद्धि प्रयोग तभी सफल हो सकता है जब वह उसके द्वारा आत्मस्वीकृत हो। प्रत्येक साधक भी श्रद्धा नहीं कर सकता क्योंकि यह उसकी सत्य को धारण करने की क्षमता पर निर्भर करता है। इस क्षमता को विकसित करने में साधक की उत्कट और कुशाग्र जिज्ञासा ही सहायक होती है। जिज्ञासा के विकास से ही सत्य को धारण करने की क्षमता विकसित होती है। मन की यह जिज्ञासा ही उन्नत होकर आत्मगत अभीप्सा का रूप धारण करती है। अभीप्सा इन्द्रियों से परे की वस्तु है अतः उसके माध्यम से होने वाली आध्यात्मिक अनुभूतियां भी इन्द्रियों द्वारा पूर्णतः अभिव्यक्त नहीं की जा सकती। जब तक इन्द्रिय-मन पर छाए आवरणों को साधना द्वारा हटाया नहीं जाता तब तक अभीप्सा का रंग फीका ही रहता है। ऐसा होने पर साधक बौद्धिक क्षेत्र में ही उलझा रहता है। अनेक प्रकार के विकारों व उपाधियों के कारण आत्मा की शक्तियां सीमित हो जाती हैं, अभीप्सा भी उन्हीं में से एक है। इस ससीम शक्ति को विकसित करके असीम बनाने के लिए निरंतर संघर्ष और साधना की आवश्यकता होती है। उपरोक्त आवरणों को साधक को अपने पुरुषार्थ द्वारा हटाना होता है किंतु अंतर्जगत में असंतुलन उत्पन्न होने पर बुद्धि नवीन जानकारियों के प्रति ईर्ष्यालु बन जाती है। वास्तव में यह साधक की जड़ता ही होती है जो रूप बदलकर बुद्धि व ज्ञान के रूप में आती है। वास्तविक ज्ञान के उदय के साथ ही यह बाधाएं नष्ट हो जाती हैं। विकारों व उपाधियों को नष्ट करने के साथ ही अभीप्सा की नैसर्गिक शक्ति को विकसित करने के लिए रचनात्मक उपाय की भी आवश्यकता होती है। इसके लिए साध्य के प्रति उत्कट अनुराग, कृतज्ञता का चिंतन और हृदय के समस्त भावों के समर्पण की आवश्यकता होती है। आगे उन्होंने बताया कि साधक जीवन भी काल के अधीन होता है अतः काल अभीप्सा पर भी प्रभाव डालता है। इससे अभीप्सा का रंग फीका पड़ जाता है तथा इसमें तेजस्विता लाने के लिए साधक को संघर्ष, उर्ध्वगामिनी साधना और सत्य का आश्रय लेना होता है। काल के विरुद्ध संघर्ष और साधना ही साधक की शक्तियां है, यद्यपि संघर्ष की शक्ति को भी काल क्षीण करता है अतः संघर्ष को एक दिन हारना पड़ता है। संचित संस्कार और पुण्य ही साधक की संघर्षक्षमता का जीवनकाल निर्धारित करते हैं। इनका क्षय होने पर साधक को अपनी हठ की शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। किन्तु काल द्वारा हठ की शक्ति का भी क्षय हो जाने पर साधक को हठ की प्रेरक शक्ति की शरण में जाना चाहिए। विनय और शरणागत होने का भाव ऐसी ही शक्तियां है। शक्ति ही काल पर अंकुश लगाने में सक्षम है अतः शक्ति की उपासना ही अभीप्सा के फीके रंगों को तेजस्विता प्रदान कर सकती है।

इसी प्रकार शाखा की अगली कड़ियों में पुस्तक के बारहवें प्रकरण 'अनुकूलता में गतिरोध' पर चर्चा करते हुए महावीर सिंह जी ने बताया कि जगत में दिखाई देने वाली असम्बद्धताओं में तात्विक एकता का दर्शन न होने से व्यक्ति पर-दोष चिन्तन करने वाला बन जाता है। वास्तव में दूसरे के दोषों को देखने की क्रिया अपने दोषों के प्रति अपनी कुंठा का ही रूप है। आत्मचिन्तन साधक का दायित्व है और उसे केवल अपने ही दोषों को देखना चाहिए और निरंतर उन दोषों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। इतना ही नहीं साधक को इन दोषों के विरोधी गुण के सृजन में भी सक्रिय रहना चाहिए। अविश्वास, संशय आदि अभाव हैं जो रचनात्मक नव निर्माण नहीं कर सकते। पर-दोष चिंतन की प्रक्रिया में साधक की दृष्टि अभावों पर लगी रहती है जिसके फलस्वरूप भाव प्रवाह कुंठित हो जाता है। यही अनुकूलता में गतिरोध आने का कारण है। ऐसा होने पर हम हमारे ध्येय के अर्थात संघ के अनुकूल नहीं रह पाते। जब हमारा व्यक्तित्व तर्कप्रधान बन जाता है तभी हममें कुंठा का जन्म होता है। कुंठा संहार शक्ति है जिससे किसी भी प्रकार का सृजन नहीं हो सकता। कुंठा के कारण जन्मी हीनवृत्ति किसी एक सिद्धि को प्राप्त करने पर उसी को सार मानने की मिथ्या हठधर्मिता कर लेती है। ऐसी परिस्थिति में संतोष और समाधान रूपी संचित पुण्य ही साधक की सहायता कर सकते हैं। इस संचित पुण्य के खर्च के साथ ही साधक को इसका संचय भी निरंतर करते रहना चाहिए। व्यक्ति अनेक बातों को सुनता है किंतु सामान्यतया वह केवल उन्हीं समाधानों को ग्रहण करता है जिनका हमारे जीवन से गहरा संबंध हो और जिसकी पुष्टि हमारी तर्क बुद्धि भी करती हो। किन्तु एक सीमा के पश्चात तर्क शक्ति हार जाती है किंतु ज्ञान की खोज के सूत्र व्यक्ति को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहते हैं। ऐसे में हृदयगत नीरवता ही आध्यात्मिक अनुभूतियों के द्वार खोल सकती है। यद्यपि बुद्धि को अपना आराध्य मान लेना हमारा विकास अवरुद्ध कर देता है तथापि अंधभक्ति व अंधश्रद्धा इससे भी बुरी हैं। क्योंकि ऐसा व्यक्ति कल्पना को ही यथार्थ मान बैठता है और कर्म विमुख बन जाता है। बिना कर्म किए कर्म को निरर्थक मान लेना एक गंभीर भूल है। ऐसा साधक तमोगुणीय शांति को ही सत्य समझ बैठता है। इसीलिए हमें सहयोगी और सामूहिक जीवन के अनुकूल बन कर रहने का निरंतर अभ्यास करना आवश्यक है। इस अनुकूलता के अभाव में कौटुंबीय जीवन विघटित होना निश्चित है। साधक जीवन मे जो परीक्षाएं आती हैं उनका हेतु उनसे पार उतरना नहीं अपितु उनकी गहराई में उतरकर उसके कारण को जान लेना है। ऐसा किए बिना इन परीक्षाओं से पार उतरने की जल्दबाजी साधक की नींव को कमजोर बना देती है जिससे कभी न कभी उसकी सम्पूर्ण साधना ढह पड़ती है। इसलिए साधक को सदैव अपने मार्ग में आने वाली परीक्षाओं की गहराई में जाकर ज्ञान के मोती प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

वर्चुअल शाखा की अगली कड़ियों में तेरहवें प्रकरण 'आत्मनिक्षेप की कृपणता' पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि व्यक्ति भविष्य का निर्माण करना चाहता है किन्तु इसके लिए वर्तमान को परिवर्तित करना उसकी शक्ति से बाहर हो तब वह संघबद्ध होकर सामूहिक शक्ति द्वारा अपना उद्देश्य पूरा करने का प्रयत्न करता है। वर्तमान के प्रति आक्रोश ही मनुष्य को अपनी इच्छानुसार भविष्य के निर्माण के लिए प्रेरित करता है और इसी से क्रांति का जन्म होता है। यद्यपि प्रकृति स्वयं अपनी रचनात्मक प्रक्रिया से क्रांति घटित करती है परंतु मनुष्य इतना धैर्य न रख पाने से अपने जीते जी ही क्रांति करना चाहता है और इसके लिए प्रयत्न भी करता है। लेकिन मानव के जो प्रयत्न प्रकृति के अनुरूप नहीं होते वे विफल हो जाते हैं। अतः काल जिस क्रांति को चरितार्थ करना चाहता है उसे पहचान कर उसी के अनुरूप प्रयत्न करने पर ही मनुष्य को सफलता मिल सकती है। मानव जो क्रांतियां करता है उनके कालान्तर में निष्फल होने का कारण है कि इन क्रांतियों ने व्यवस्था आदि बाह्य स्वरूप में तो परिवर्तन किया परंतु मानव के हृदय को परिवर्तित नहीं किया। इसीलिए इन क्रांतियों ने एक प्रकार के शोषण को समाप्त किया तो साथ ही नए प्रकार के शोषण की नींव भी रख दी। अतः मनुष्य के हृदय को परिवर्तित करने वाली क्रांति ही अंतिम व निर्णायक क्रांति होगी। प्राकृतिक विकास हो अथवा मानवीय क्रांति, सभी में सामूहिकता की शक्ति आवश्यक है। एकांगी साधना से यह सम्भव नहीं है। प्रकृति के अनुरूप क्रांति का मार्ग अपनाने पर भी व्यक्ति का संघबद्ध होना आवश्यक है। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

शाखामृत....

(पृष्ठ 5 से लगातार) संघबद्ध होने के लिए मनुष्य को संघगत नेतृत्व के अथवा परमेश्वर के अधीन होना पड़ता है। यही आत्मनिक्षेप अर्थात स्वयं का समर्पण है। यह आत्मनिक्षेप ईश्वर के प्रति भी हो सकता है और समूह के प्रति भी परन्तु इसके बिना क्रांति का होना असंभव है। आत्मनिक्षेप की प्रक्रिया में अनेक बाधाएं हैं जिनमें पहली है व्यक्ति का अहंकार। अहंकार के रहते हुए व्यक्ति संघबद्ध नहीं हो सकता। इस अहंकार के वश होकर वह आत्मनिक्षेप को स्वतंत्रता का विरोधी बताता है। परंतु वास्तव में स्वतंत्रता का अर्थ भी स्वयं के तंत्र के अधीन होना ही है जिसमें व्यक्ति अपने स्वयं के बनाए अंकुशों के अधीन होता है। अतः स्वतंत्रता के दावे के छद्मवेश में व्यक्ति का अहंकार ही उसे संघबद्ध होने से रोकता है। आत्मनिक्षेप में दूसरी बाधा है सुरक्षा का भय। परंतु ईश्वर के प्रति आत्मनिक्षेप में सुरक्षा का भय हास्यास्पद है क्योंकि हम उसी के अंश है। इसी प्रकार आत्मनिक्षेप में किसी प्रकार की शर्त होना भी समस्या बन जाता है। इन समस्याओं का हल त्याग में ही निहित है। त्याग ही भारतीय संस्कृति का मूल तत्व है और श्री क्षत्रिय युवक संघ का आधार भी त्याग ही है। संघ में भी हमारे आत्मनिक्षेप की आवश्यकता होती है तभी हम सही अर्थ में संघबद्ध हो सकेंगे। इसके लिए हमें अपनी अहंकार, भय जैसी प्रवृत्तियों को साधना द्वारा निर्मूल बनाना पड़ेगा।

वर्चुअल शाखा में पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा लिखित पुस्तक '**गीता और समाजसेवा**' के प्रकरण 'व्यक्तिवाद' पर चर्चा को आगे बढ़ाते हुए **माननीय अजीतसिंह जी धोलेरा** ने कहा कि व्यक्तिवाद के कारण व्यक्ति अन्यों की अपेक्षा स्वयं को विशिष्ट मानता है साथ ही यह भी चाह रखता है कि अन्य लोग भी उसे श्रेष्ठ मानें। इस प्रवृत्ति के कारण ही मनुष्य स्वागत, पुष्पमालाएं आदि के तुच्छ बाह्याडम्बरों में आसक्त हो जाता है। परंतु सच्चा समाजसेवक इन आसक्तियों में नहीं फंसता। गीता व्यक्तिवाद का खंडन करती है परंतु साथ ही वीर पूजा का समर्थन भी करती है किन्तु उन्हीं की जो अब इस संसार में नहीं है। व्यक्ति की अपेक्षा सिद्धांत की पूजा ही भारतीय संस्कृति का गुण है। जब से हमने सिद्धांत की अपेक्षा व्यक्ति को महत्त्व देना प्रारम्भ किया, जब से त्याग की अपेक्षा अहंकार को प्रतिष्ठा मिलने लगी तभी से हमारा पतन प्रारम्भ हुआ। जीवित व्यक्तियों को महान बता कर गुरुडम को बढ़ावा देना अनुचित है क्योंकि जब तक व्यक्ति जीवित है वह अपूर्ण है। अपूर्ण आदर्श का अनुकरण न व्यक्ति के लिए उपयुक्त है न समाज के लिए क्योंकि यदि ऐसे व्यक्ति का पतन होता है तो वह उसका अनुकरण करने वाले व्यक्ति व समाज को निराश व किंकर्तव्यविमूढ़ बना देता है। व्यक्तिवाद के कारण समाज सिद्धांतविहीन व रूढ़िवादी बन जाता है। अतः हमें समाज में व्यक्तिवाद को हावी होने से रोकने का प्रयत्न सदैव करते रहना चाहिए। यद्यपि व्यक्तिवाद के खंडन का अर्थ व्यक्ति के गुणों की अवहेलना नहीं है। अमूर्त गुण व्यक्ति के माध्यम से ही अभिव्यक्त होते हैं अतः उन गुणों का तो हमें अनुकरण ही करना है। प्रत्येक मनुष्य ईश्वर की अभिव्यक्ति है अतः उसमें कोई न कोई गुण होता ही है। साधक को प्रत्येक व्यक्ति में उसके गुणों को ही देखने व उनके अनुकरण का अभ्यास करना चाहिए, यही विकास का सही मार्ग है।

शाखा की अगली कड़ियों में पुस्तक के तेरहवें प्रकरण 'साधना की दिव्य शक्ति' पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि मनुष्य इस सृष्टि में भगवान की सर्वश्रेष्ठ कृति है क्योंकि केवल मनुष्य में ही अपने कर्त्ता को जानने व उस तक पहुँचने की क्षमता है। शक्ति का अथाह स्रोत मनुष्य के अंतःकरण में ही छिपा है और साधना द्वारा व्यक्ति अपनी शक्तियों का साक्षात्कार कर सकता है। सर्वशक्तिमान आत्मा पर जड़धर्मी शरीर का बंधन होता है। गीता ने भी ज्ञान को अज्ञान से आवृत्त बताकर उसी सिद्धांत की पुष्टि की है। क्षणभंगुर शरीर को सब कुछ मानना ही माया है। शरीर के बंधनों से मुक्त होने पर ही आत्मा अपने सच्चे स्वरूप को प्राप्त होती है। भारतीय मनीषियों ने शरीर के जीवित रहते हुए भी आत्मज्ञान का, मुक्ति का मार्ग ढूंढ निकाला। वह मार्ग है- क्षुद्र देहाध्यास से ऊपर उठना। गीता कहती है कि इन्द्रियों के बाह्य प्रवाह को अंतर्मुखी बनाने से ही हम शरीर के भोगों से ऊपर उठ सकते हैं। ऐसा होने पर ही हमारी भीतरी शक्तियों का हमें परिचय प्राप्त होता है। यही योग है। चित्त की एकाग्रता से आत्मा शरीर में रहते हुए भी उससे मुक्त हो सकती है। यद्यपि चंचल स्वभाव वाली इंद्रियां मनुष्य के मन को स्थिर नहीं होने देती परंतु अभ्यास व वैराग्य द्वारा इन्हें वश में किया जा सकता है। गीता ने अभ्यास को बहुत अधिक महत्त्व दिया है। अभ्यास का अर्थ है निरन्तरता और नियमितता। श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्यप्रणाली भी नियमितता और निरंतरता पर ही आधारित है। शाखा और शिविर गीता में वर्णित अभ्यास का ही स्वरूप है। भोग और ऐश्वर्य में मोहित व्यक्ति के पास स्थिर विवेक नहीं होने से वे उचित अनुचित का निर्णय नहीं कर सकते। साधना और अभ्यास से ही बुद्धि को श्रेष्ठ और स्थिर बनाया जा सकता है। यदि कोई बिना अभ्यास के समय आने पर सर्वस्व दान की बात करता है तो वह मिथ्यावादी है। साधना और अभ्यास की गति ऊर्ध्व दिशा में होती है। हमारी पाशविक वृत्तियां हमें सहज रूप से पतन की ओर ले जाती है किंतु साधना द्वारा इस प्रवाह को रोक कर हम देवत्व की ओर बढ़ सकते हैं। समाज-जागरण का कार्य करने वाले को समाज को उर्ध्वगामिनी साधना में नियोजित करना पड़ेगा। इसके लिए अनुशासन और संयम के गुणों को समाज में प्रतिष्ठापित करना पड़ेगा। गीता के अनुसार जो कार्य करते समय अमृत के समान लगे परंतु जिसका परिणाम विष के समान हो वह त्याज्य है तथा जो करते हुए विष के समान लगे परंतु जिसका परिणाम अमृत तुल्य हो वह कर्म करणीय है। व्यक्ति को तामसिक व राजसिक सुख का त्याग करके सात्विक सुख की ही आकांक्षा रखनी चाहिए। फल की इच्छा से रहित होकर निरंतर कर्मरत रहकर ही जड़धर्मी आवरणों में कैद दिव्य शक्तियों को जागृत किया जा सकता है।

इसी प्रकार पुस्तक के चौदहवें प्रकरण 'काम' पर चर्चा करते हुए अजीतसिंह जी ने बताया कि सामान्यतया काम को केवल जननेन्द्रिय की वासना का ही रूप समझा जाता है परंतु यह उसका संकुचित रूप है। काम का अर्थ सभी प्रकार की कामनाओं से है और गीता ने भी 'काम' शब्द का प्रयोग इस व्यापक अर्थ में ही किया है। भारतीय संस्कृति में भी काम को मानव जीवन के चार पुरुषार्थों में से एक माना गया है। परंतु गीता का दृष्टिकोण एक साधक का दृष्टिकोण है अतः वह सभी प्रकार की कामनाओं के त्याग पर बल देती है चाहे धर्म व मोक्ष की भी कामना क्यों न हो। गीता केवल साध्य की ही नहीं, साधना व साधन की पवित्रता भी आवश्यक बताती है। गीता के अनुसार कामनाओं के त्याग से ही चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति संभव है। इस प्रकार गीता प्रवृत्ति व निवृत्ति मार्ग का अनूठा समन्वय करती है। काम की प्रवृत्ति पर कई ग्रंथ लिखे जा चुके हैं। कई पाश्चात्य मनोविज्ञानियों ने तो मनुष्य जीवन की समस्त प्रवृत्तियों को कामजन्य बताया है। गीता ने भी काम के प्रभाव को स्वीकारते हुए इसे ज्ञानियों का प्रमुख शत्रु बताया है। यह सत्य है कि काम का मनुष्य के शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। गीता के अनुसार इस प्रभाव के कारण ही व्यक्ति पापकर्म में भी प्रवृत्त होता है। अतः साधक के लिए काम पर विजय प्राप्त करना आवश्यक है। काम हमारा भीतरी शत्रु है इसलिए उसे हराना अत्यंत कठिन कार्य है। इस पर विजय प्राप्त करने के मार्ग हैं- काम को बल से नष्ट करना, काम को अपना दास बना लेना, कूटनीति से काम को मूर्ख बनाना और काम से संधि करके उसे अपना सहयोगी बनाना। उपरोक्त मार्गों को न अपना कर यदि हम कामनाओं को पूर्ण करने का प्रयास करते रहेंगे तो वह केवल छलना ही है क्योंकि भोगों से कामनाओं की अग्नि कभी भी तृप्त नहीं होती। ऐसा प्रयत्न करने पर मनुष्य अपनी अमूल्य शक्तियों को आशाओं के फंदे में फंसकर व्यर्थ गंवा बैठता है। काम को वश में करना असंभव नहीं है। गीता के अनुसार इन्द्रियों और मन को वश में करने से काम को वश में किया जा सकता है। काम का लोभ और क्रोध से भी गहरा संबंध है। इन तीनों को वश में करके ही मनुष्य सुखी हो सकता है। गीता के अनुसार स्थितप्रज्ञ व्यक्ति ही काम व क्रोध के वेग को सहन कर सकता है। अतः अभ्यास द्वारा अपनी बुद्धि को स्थिर बनाना साधक के लिए आवश्यक है।

शाखा की अगली कड़ियों में पुस्तक के अगले प्रकरण 'त्याग और समभाव' पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान में त्याग के स्थान पर त्याग का दिखावा बहुत अधिक बढ़ गया है। आजकल लोगों के त्याग के पीछे पूजित होने का भाव कार्य करता है कि नेता जेल जाने को भी महान त्याग बताते हैं जबकि पूज्य श्री तनसिंह जी स्वयं जेल में रह चुके थे व उन्होंने कहा है कि जेल जाना कोई विशेष त्याग नहीं है। गीता केवल कष्ट-सहन को ही त्याग नहीं मानती है। गीता ने तो समस्त काम्यकर्मों को छोड़ने व समस्त कर्मों के फल के त्याग को ही वास्तविक त्याग कहा है। गीता ने त्याग के तीन स्वरूप - तामसिक, राजसिक व सात्विक - बताए हैं। गीता के अनुसार मोह के कारण कर्म त्याग तामसिक त्याग है तथा शारीरिक क्लेश के कारण कर्म त्याग राजसिक त्याग है। नियत कर्म करते समय आसक्ति व फल के त्याग को ही गीता ने सात्विक त्याग बताया है। यही गीता का कर्मयोग है। कर्मसंन्यास को हेय मानते हुए गीता कर्मयोग को प्रतिष्ठित करती है। गीता के अनुसार गृहस्थ भी त्यागी हो सकता है और संन्यासी भी रागग्रस्त हो सकता है। गीता ने संन्यास की पारंपरिक मान्यता का खंडन करते हुए कर्मों के त्याग की अपेक्षा कर्मयोग को ही वास्तविक संन्यास बताया है। कर्म में समत्व होना ही कर्मयोग है। कर्मफल के त्याग से ही शांति प्राप्त हो सकती है अतः समाज-सेवक को कर्मफल में आसक्ति को छोड़ देना चाहिए। कर्मफल में आसक्ति न हो तो समाजसेवक के निराश व अकर्मण्य होने का भी कोई कारण नहीं रहेगा। ऐसा होने पर ही समाजसेवक किसी दूरदर्शी नीति को क्रियान्वित कर सकता है। गीता अपने साधक को सुख-दुःख, सिद्धि-असिद्धि व हर्ष-शोक में समभाव रखने की शिक्षा देती है। यही गीता का समत्व योग है। समत्व योग को ही भगवान श्रीकृष्ण ने मोक्ष का भी माध्यम बताया है। जिसका मोह नष्ट हो जाता है, जो आसक्ति पर विजय प्राप्त कर लेता है वही ईश्वर में नित्य स्थिर होकर परमपद प्राप्त करता है, ऐसा गीता का आश्वासन है। तप, ज्ञान और कर्म सभी में योग को गीता ने महत्त्व दिया है क्योंकि जो कर्म द्वंद्वभाव से परे हैं केवल वही बंधन उत्पन्न नहीं करते। इसीलिए समत्व भाव से किए गए योगी के कर्म बंधन नहीं उत्पन्न करते। आज समाज जागरण के लिए त्याग और समभाव के इसी व्यावहारिक आचरण की सर्वाधिक आवश्यकता है और श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी का अभ्यास करवा रहा है।

(पृष्ठ एक का शेष)

नारायणसिंह जी....

बड़े-बड़े सन्त, महापुरुष हुए परन्तु उनके जीवन काल में एक नानक देव जी को छोड़कर किसी को ऐसा अनुयायी नहीं मिला जैसा पू. तनसिंह जी को पू. नारायणसिंह जी मिले। कृष्ण को अर्जुन मिले और उन दोनों गुरु शिष्य का आत्मीय संवाद अर्जुन मिले गीता रूपी शास्त्र बन गया। राम को लक्ष्मण व हनुमान अवश्य मिले परन्तु वह सतयुग था। कलयुग के इस काल में जहां अपने भोग और साधन सम्पन्नता के लिए मानव अपनों तक का गला काटने को तैयार हो, ऐसे काल में अपनी लगी हुई सरकारी नौकरी छोड़कर जैसे रखोगे उसमें ही सन्तुष्ट रहने का निर्णय करना कोई आसान कार्य नहीं था। हम साधारण आदमी पहले परिणाम सोचते हैं व जब तक कोई उस कार्य के लाभ के विषय में पहले नहीं बतावे तब तक कार्य को हाथ में नहीं लेते हैं, परन्तु जो महापुरुष संसार में हुए हैं उन्होंने अपने मार्ग द्रष्टा पर विश्वास व श्रद्धा करके अपना सब कुछ अर्पण कर दिया और जो हमारे जैसे परिणाम के फल की चिन्ता में पहले सफलता की गारन्टी चाहते हैं, वे किनारे पर ही खड़े रह जाते हैं। महापुरुषों का जीवन काल चल रहा होता है उस समय तो गणित बैठाते रहते हैं और जब महापुरुष संसार से विदा हो जाते हैं तो जयंतियां मनाने का आयोजन करके कर्तव्य की इति श्री कर लेते हैं। अतः पूज्य नारायणसिंह जी के जीवन से यदि हम एक ही प्रेरणा लें तो वह है अपने ध्येय, मार्ग व नेता पर पूर्ण विश्वास व श्रद्धा करके जीवन को उसके लिए खपा दें तो इस जन्म में नहीं तो भावी जन्म में अवश्य ही वहां पहुंच जाएंगे जहां परम योगी पूज्य नारायणसिंह जी पहुंचे। संसार में हम रात-दिन एक करके धन, सम्पति, पद, प्रतिष्ठा व परिवार के लिए खपते हैं, परन्तु इनमें एक भी उपलब्धि ऐसी नहीं जो साथ जा सके व मन को शान्ति प्रदान कर सके। परन्तु पू. नारायणसिंह जी ने जो सम्पत्ति प्राप्त की उसे न तो इस लोक में न परलोक में कोई नष्ट कर सकता है और मात्र एक साधन कि बिना शंका के अपने मार्ग द्रष्टा के मार्ग पर चलते जाओ-चलते जाओ। चलते-चलते सब शिकायत बे जुबां हो जाती हैं।

दुर्गादास...

उनको कुछ नहीं चाहिए लेकिन फिर भी वे संसार के सभी कर्तव्यों में रत रहते हैं और जीवन के अंतिम समय तक निरासक्त कर्मयोगी बन हमारे लिए आराध्य बन जाते हैं।

ऐसे महात्मा के जयंती पर उनका पुण्य स्मरण ही हमारे लिए प्रेरक हो जाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का मार्ग निष्काम कर्मयोग का मार्ग है और इसलिए हम सबको दुर्गाबाबा का जीवन आकर्षित करता है नमन करने को प्रेरित करता है, प्रेरणा लेने का आग्रह करता है और फिर चलने में कदम उठाने में प्रवृत करता है। ऐसे महान दुर्गाबाबा को शत-शत नमन।

प्रतिभाएं

श्री दुर्गा महिला विकास संस्थान, नाथावतपुरा (सीकर) में अध्ययनरत निम्न बालिकाओं ने सी.बी.एस.ई. 12वीं में उत्कृष्ट परिणाम दिया है।

खुशीकंवर पुत्री विपिन सिंह निवासी धमोरा (झुंझुनूं), कला वर्ग 97.20 प्रतिशत।

वंदना कंवर पुत्री ओमसिंह निवासी लिचाणा (नागौर), विज्ञान वर्ग 91 प्रतिशत।

दीपिका कंवर पुत्री स्व. सुल्तानसिंह धीजपुरा (नागौर), कला वर्ग 94 प्रतिशत।

दिव्यांशी कंवर पुत्री स्व. शैतान सिंह निवासी सेतरावा (जोधपुर), कला वर्ग 89 प्रतिशत।

नरेन्द्र कंवर पुत्री भीकसिंह निवासी सेतरावा (जोधपुर), कला वर्ग 95 प्रतिशत।

शीतल कंवर पुत्री गोपाल सिंह निवासी चावण्डिया (नागौर), कला वर्ग 88 प्रतिशत।

जानकी (बाड़मेर) निवासी **रविन्द्रसिंह** पुत्र जोरासिंह ने 12वीं विज्ञान वर्ग 90.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

टेकरा (जोधपुर) निवासी **ऐश्वर्या कंवर** पुत्री दानवीर सिंह भाटी ने 12 वीं विज्ञान वर्ग में 93.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

उगेरी गिराब (बाड़मेर) निवासी **शिशुपाल सिंह** पुत्र गुलाब सिंह ने बारहवीं विज्ञान में 84.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

मूलतः ठिमोली हाल निवासी सीकर **आकांक्षा सिंह** पुत्री ओमपालसिंह ने ICSE बोर्ड की 10वीं परीक्षा में 98.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

वीरभद्रसिंह पुत्र अरुसिंह निवासी जांगलू (बीकानेर) ने सीबीएसई से कक्षा 12वीं विज्ञान वर्ग में 94.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सूर्यपालसिंह पुत्र खीमसिंह बालावत निवासी चुरा (जालोर) ने सीबीएसई से 10वीं में 80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

कोमल राठौड़ पुत्री धनवीरसिंह निवासी सराना (जालोर) ने कक्षा 10वीं में 97.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

जब्बरसिंह पुत्र माधुसिंह बाला निवासी लालपुरा (जोधपुर) ने आरबीएसई से 12वीं विज्ञान वर्ग में 89.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

मीनाक्षी कंवर पुत्री भंवरसिंह राठौड़ निवासी बालवा (नागौर) ने आरबीएसई से 12वीं कला वर्ग में 90.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

श्रेया राठौड़ पुत्री रतनसिंह राठौड़ निवासी लुणु (बाड़मेर) ने सीबीएसई से 12वीं कक्षा में 91.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

चंचल कंवर पुत्री भवानीसिंह निवासी चरड़ास (नागौर) ने 12वीं कक्षा में 83.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व सदस्य शिवपालसिंह नांगल के पौत्र **हर्षपाल सिंह** ने सीबीएसई से 12वीं कक्षा कला वर्ग में 97.3 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

अणचकंवर इंदा पुत्री करणसिंह निवासी बेलवा राणाजी (जोधपुर) ने आरबीएसई 12वीं में 95 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सरूपकंवर इंदा पुत्री करणसिंह निवासी बेलवा राणाजी (जोधपुर) ने आरबीएसई 12वीं में 93 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

लक्ष्मी कंवर इंदा पुत्री रतनसिंह निवासी निम्बो का गांव (जोधपुर) ने आरबीएसई 12वीं में 93 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

रोशनी कंवर इंदा पुत्री सौभाग्य सिंह निवासी बस्तवा सुंडा ने आरबीएसई 12वीं 92.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

गणपतसिंह पुत्र अमरसिंह निवासी हापों की ढाणी ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 91.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

रविन्द्रसिंह पुत्र जोरसिंह निवासी रामसर ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 90.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

रविन्द्रसिंह पुत्र प्रतापसिंह निवासी बैया ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 90.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

मोहनसिंह पुत्र लालसिंह निवासी बाड़मेर ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 89.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

अवतारसिंह पुत्र मदनसिंह निवासी गरल ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 89.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

जुंझारसिंह पुत्र सगतसिंह निवासी फोगलिया ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 88.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सुरेन्द्रसिंह पुत्र राणसिंह निवासी बेरियाड़ा ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 87.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

गोपालसिंह पुत्र मोहताबसिंह निवासी तामलोर ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 86.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

किरण कंवर पुत्री अभयराज सिंह निवासी कोटड़ा ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 86.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

प्रवीणसिंह पुत्र पीठसिंह निवासी मोढ़ा ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 86.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

जीवनसिंह पुत्र नाथूसिंह निवासी गंगाला ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 86.00 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सूरजपालसिंह पुत्र चन्द्रभान सिंह निवासी फागलिया ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 85.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

शिशपालसिंह पुत्र गुलाबसिंह निवासी उगेरी ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 84.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

रघुवीरसिंह पुत्र जब्बरसिंह निवासी केतु ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 83.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

विजयसिंह पुत्र कंवरराजसिंह निवासी थुंबली ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 83.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

भानुप्रतापसिंह पुत्र हिन्दूसिंह निवासी कोटड़ा ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 82.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

संग्रामसिंह पुत्र विजयसिंह निवासी परो ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 82.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

विक्रमसिंह पुत्र भबूतसिंह निवासी बांदरा ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 81.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

नरेन्द्रसिंह पुत्र देवीसिंह निवासी कोटड़ा ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 81.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

मोतीसिंह पुत्र श्यामसिंह निवासी दराबा ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 81.00 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

नरपतसिंह पुत्र बाबूसिंह निवासी भोजराज की ढाणी (रामगढ़) ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 80.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

संदीपसिंह पुत्र वचनसिंह निवासी लुणु ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 80.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

देवेन्द्रपालसिंह पुत्र जालमसिंह निवासी राजमथाई ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 80.00 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

(पृष्ठ एक का शेष)

शह-मात...

अपने साथी विधायकों को निपटाने के लिए स्वयं द्वारा रचे गए खेल को जब विपक्षी पार्टी के या राज्यपाल के माथे चढ़ा जाता है तो लगता है कि लोगों की नैतिकता कितनी ऊपरी है। अपने विरोधी पार्टी के बागी विधायकों को सम्पूर्ण संरक्षण देकर भी अपने आपको बाहर खड़ा सिद्ध करने के लिए की जाने वाली बयानबाजी मिथ्या प्रवंचना है और ऐसे प्रवंचक लोगों को अपनी प्रतिनिधि मानना भी अपने आप में मजबूरी है। इसी मजबूरी के चलते गांधीवाद की चादर ओढ़ कर अपना नंगापन छिपाने का असफल प्रयास करने वाले लोगों को व्यवस्था के नियंता मानना पीड़ादायक ही है। लेकिन आम जनता इस पीड़ा को सहने को मजबूर है। हवा में तैरती नैतिकता को देखने को मजबूर है तो धरातल पर हो रहे नंगे नाच को देखने को मजबूर है। ऐसा लगता है कि यह मजबूरी इस व्यवस्था की नियति बन गई है कि राम के अस्तित्व पर प्रश्न उठाने वाले राम धुन गाने का नाटक करते हैं वहीं राम नाम के सहारे सत्ता पाने वाले मर्यादाओं को तार-तार करते हैं। शह और मात के खेल में हवा में तैरती नैतिकता के बीच तार-तार होती मर्यादा को टुकर टुकर देखता मतदाता आखिर कर भी क्या सकता है। इसे इस बार इन्हें तो अगली बार उन्हें चुनना ही है क्यों कि हर पांच वर्ष में होने वाले नाटक में वह तटस्थ भी कैसे रह सकता है।

सम्पर्क...

संभाग प्रमुखों ने अपने यहां इस अवधि में हुए संघ कार्य की जानकारी दी। केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने महामारी के दौर में सावधानी बरतने की सलाह दी। बैठक में तय किया गया कि प्रतिमाह केन्द्रीय स्तर पर ऐसी समीक्षा बैठक आयोजित होगी एवं संभाग प्रमुख अपने स्तर पर भी ऐसी बैठकें आयोजित करें।

ऑनलाईन मार्गदर्शन कार्यशालाएं जारी

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा विभिन्न विषयों पर ऑनलाईन मार्गदर्शन कार्यशालाएं (वेबिनार) इस पखवाड़े में भी जारी रही। 12 जुलाई को आर्थिक आधार पर आरक्षण (ईडब्ल्यूएस) के प्रमाण-पत्र बनाने की प्रक्रिया को लेकर वेबिनार आयोजित की गई जिसमें सुमेरपुर (पाली) में ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी के रूप में कार्यरत परबतसिंह खिदारागांव ने इस प्रमाण-पत्र को बनाने के पूरी प्रक्रिया की जानकारी दी। इस प्रक्रिया में आने वाली सामान्य कठिनाइयों एवं प्रायः की जाने वाली प्रक्रियागत गलतियों के बारे में बताया। उन्होंने परिवार की आय की संकल्पना को समझाते हुए कहा कि माता-पिता, स्वयं, पति-पत्नी व अविवाहित भाई-बहिन तथा पुत्र-पुत्रियों की आय परिवार की आय में शामिल है। महिला के सास-ससुर की जगह उनके माता-पिता की आय को परिवार की आय में शामिल माना जाता है। यह प्रमाण-पत्र अनारक्षित वर्ग को ही मिलता है। राज्य में 8 लाख की आय ही एक मात्र शर्त है लेकिन केन्द्र में पूर्व की भांति शर्तें लागू हैं। केन्द्र के लिए बनने वाला प्रमाण-पत्र राज्य में भी उपयोग हो सकता है लेकिन राज्य वाला केन्द्र में नहीं चलता। फॉर्म ऑनलाईन के साथ-साथ ऑफलाईन भी भरना है एवं उसका एक भी कॉलम खाली नहीं रखना है। जिन बातों का उल्लेख फार्म में किया गया है उनके दस्तावेजों की प्रतिलिपि भी लगानी है। पटवारी का भूमि संबंधी प्रमाण-पत्र लगाना भी आवश्यक है। इस प्रमाण-पत्र की वैधता वित्तीय वर्ष के लिए होती है और जिस सत्र के लिए प्रमाण पत्र बनाना है उसके पिछले सत्र की आय गिनी जाती है। इस प्रमाण-पत्र का प्रतिवर्ष नवीनीकरण किया जाता है और उसके लिए पूरी प्रक्रिया प्रतिवर्ष करनी पड़ती है। इस प्रकार उन्होंने पूरी प्रक्रिया की जानकारी दी एवं इससे संबंधित शंकाओं का समाधान भी किया।

इसी प्रकार सूचना तकनीक क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं को लेकर चल रही सीरिज में तीसरी वेबिनार 18 जुलाई को की गई जिसमें वर्तमान में सूचना तकनीक क्षेत्र के दो टूल

'Workday' एवं 'Regulatoly Report' के बारे में जानकारी दी गई। पूना में संघ के स्वयंसेवक आई.टी. प्रोफेशनल पवनसिंह बिखरणिया के निर्देशन में प्रशिक्षण कर रोजगार पा चुके आई.टी. प्रोफेशनल का एक समूह इस सीरिज को संचालित कर रहा है। नरेन्द्रसिंह छापरी के निर्देशन में हो रहे इस कार्य में इस क्षेत्र की नवीन तकनीकों एवं रोजगार की संभावनाओं के बारे में बताया जाता है। इस चर्चा में यह बात विशेष रूप से उभर कर आई कि इस क्षेत्र में जितनी संभावनाएं तकनीकी क्षेत्र के प्रोफेशनल्स की है उतनी ही गैर तकनीकी लोगों के लिए भी है। वे कुछ अतिरिक्त तैयारी के साथ इस क्षेत्र में अच्छे प्रतिफल वाली नौकरी पा सकते हैं। इस वेबिनार में फिनलैण्ड में कार्यरत मूलसिंह भाटी व पूणे में कार्यरत मोनूसिंह शेखावत ने जानकारियां साझा की। 19 जुलाई को 'शिक्षा के अधिकार' के तहत निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश की प्रक्रिया एवं नियमों की जानकारी देने के लिए वेबिनार का आयोजन किया गया। जोधपुर में अध्यापक के रूप में कार्यरत बजरंगसिंह नाडसर व सरदारशहर में निजी शिक्षण संस्थान के संचालक किशोरसिंह रोलासर ने इस विषय में अपनी जानकारी साझा की। बजरंग सिंह ने नियम एवं प्रक्रिया की जानकारी दी वहीं किशोरसिंह ने विद्यालयों द्वारा इस संबंध में की जाने वाली कार्यवाही की जानकारी दी। बताया गया कि 2.50 लाख से कम आय वाले अभिभावक अपने बच्चों का इस अधिकार के तहत अपने वार्ड या पंचायत के निजी विद्यालयों में प्रवेश दिला सकते हैं। निजी विद्यालयों को अपनी प्रथम कक्षा के कुल प्रवेश के 25 प्रतिशत विद्यार्थियों को इस अधिकार के तहत निःशुल्क प्रवेश देना पड़ता है। ऐसे विद्यार्थियों का कक्षा 8 तक की शिक्षा का पूरा खर्च सरकार उठाती है और वह संबंधित विद्यालय का पुनर्भरण करती है। इस विषय में लाईव जुड़े लोगों की अनेक शंकाओं का समाधान भी किया गया। 25 जुलाई को सूचना तकनीक क्षेत्र की कार्यशालाओं की सीरिज में कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग लेंग्वेज 'जावा' को लेकर कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें पूना में कार्यरत आई.टी. प्रोफेशनल कुलदीपसिंह पांचुडला ने इस क्षेत्र में संभावनाओं के बारे में बताया। पवनसिंह बिखरणिया ने बताया कि यह ऐसा क्षेत्र है जिसमें नौकरी की निश्चित संभावनाएं है।

28 जुलाई को उत्तर माध्यमिक शिक्षा में उपलब्ध छात्रवृत्तियों की जानकारी हेतु कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय में प्रोफेसर ज्ञानसिंह बगड़ ने केन्द्र सरकार के स्तर पर एवं निजी औद्योगिक घरानों, बैंकों आदि के द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्तियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इसमें योग्यता के आधार पर अनेक छात्रवृत्तियां ऐसी है जो एक बार मिलना शुरू होने के बाद पढ़ाई जारी रहने तक मिलती रहती है। इनके लिए उनसे संबंधित जानकारियों की वेबसाईट के लिंक बताए गए। विभिन्न टेलेंट सर्च कार्यक्रमों की भी जानकारी दी गई। ये सभी कार्यशालाएं श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के फेसबुक पेज व युट्यूब चैनल पर उपलब्ध है जिन्हें वहां जाकर देखा जा सकता है।

संघर्ष समिति ने धोखा दिवस मनाया

सांवराद प्रकरण में सीबीआई द्वारा राजपूत समाज के 24 व्यक्तियों को आरोपित करने के विरुद्ध 17 जुलाई को राजपूत रावणा राजपूत संघर्ष समिति द्वारा धोखा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर 18 जुलाई 2017 में सरकार के साथ हुए समझौते की प्रतियों को जलाया गया एवं मुंह पर काली पट्टी बांधकर विरोध प्रकट किया गया। जयपुर सहित प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर प्रशासन को ज्ञापन सौंप कर मांग की गई कि समाज के 24 व्यक्तियों को इरादतन परेशान करने की नीयत से दर्ज की गई प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 115/17 थाना जसवंतगढ़ को कानूनी रूप से वापिस लिया जाए जिसका उल्लेख उक्त समझौते में नहीं था बल्कि सरकार द्वारा द्वेषतापूर्वक कार्रवाई करते हुए इसे 6 माह बाद सीबीआई को भेजा गया। संघर्ष समिति के संयोजक गिरिराज सिंह लोटवाड़ा के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल राजभवन में राज्यपाल महोदय के सचिव सुबीर कुमार से मिला एवं उन्हें ज्ञापन सौंपकर उचित कार्रवाई की मांग की।

बीकानेर में सहयोगियों की गुगल मीट

बीकानेर संभाग में संघ कार्य में सहयोग करने वाले सहयोगी वर्ग की एक बैठक 24 जुलाई 2020 को शाम 6 बजे गुगल मीट के माध्यम से रखी गई। इस मीट में 50 से अधिक सहयोगी जुटे एवं महामारी के कारण उपजी परिस्थितियों के बीच संघ कार्य को लेकर चर्चा की। संघ के फेसबुक पेज के माध्यम से प्रतिदिन लगने वाली केन्द्रीय शाखा के महत्व को लेकर चर्चा की गई एवं उसमें नियमित जुड़ने का आग्रह किया गया। पूज्य नारायणसिंह जी रेड़ा की जयंती में बीकानेर क्षेत्र से 1000 से अधिक परिवारों को ऑनलाईन जोड़ने का लक्ष्य लिया गया एवं उसे हासिल करने में सहयोग की अपेक्षा की गई। संघ साहित्य पठन के माध्यम से संघ के दर्शन से निकटता बनाए रखने को लेकर भी चर्चा की गई।

गोहिलवाड़ संभाग की बैठक

गोहिलवाड़ संभाग के स्वयंसेवकों की एक बैठक 27 जुलाई (रविवार) को केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्रसिंह पांची के प्रतिष्ठान पर आयोजित की गई जिसमें संभाग के 42 स्वयंसेवक शामिल हुए। बैठक में विगत महीनों में हुए संघ कार्य की समीक्षा की गई एवं आगामी दिनों की कार्य योजना बनाई गई। 30 जुलाई को वर्चुअल माध्यम से आयोजित पूज्य नारायणसिंह जयंती के लिए जिन क्षेत्रों में कोरोना का प्रभाव नहीं है, वहां गांवों में अपने परिचितों, परिवारों को अपने घर पर बुलाकर कार्यक्रम में सामुहिक रूप से शामिल होने की योजना बनाई गई। प्रत्येक स्वयंसेवक ने ऐसे 10-10 परिवारों की जिम्मेदारी ली। शेष स्थानों पर फोन से सम्पर्क कर आग्रह करने का निर्णय लिया गया। संयोमा की राशि जमा करवाने को लेकर चर्चा की गई। उपस्थित स्वयंसेवकों ने उसी समय संयोमा जमा करवाया। आगामी 4 अगस्त को केन्द्रीय सहयोगियों के साथ होने वाली वर्चुअल संभागीय बैठक की तैयारी बाबत चर्चा की गई एवं सभी से आगामी माह की अपनी व्यक्तिगत कार्य योजना मांगी गई।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org